P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-III*November-2014
E: ISSN NO.: 2349 – 980X

स्मृतिशास्त्रोक्त नामकरण संस्कार की ज्योतिष–अवधारणा

सारांश

समस्त चराचर जगत् नामरूपात्मक है। संस्कार की कोई भी वस्तु नाम और रूप की परिधि से परे नहीं। रूप चक्षुग्राह्य और नाम श्रुतिसंवेद्य होता है। रूप के साक्षात्कार से किसी वस्तु का प्रथम आभास होता है तो नाम से उसका स्पष्ट अभिज्ञान। नाम शब्द का तात्पर्य – 'नाम्यते अभिधीयते अर्थोऽनेन इति नाम' अर्थात् जिसके अर्थ का अभिधान हो, वही नाम है। सांसारिक जीवन में वस्तु की तरह व्यक्ति को अपनी पहचान बनाने के लिए नाम का होना आवश्यक है। नाम की आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखकर स्मृतिकारों ने नामकरण संस्कार को धार्मिक रूप दे दिया, क्योंकि इसके श्रवण मात्र से मनुष्य के गुणधर्मों का ज्ञान हो जाता है। इसके समय निर्धारण के विषय में अलग–अलग मत मिलते हैं। स्मृतिकार ज्योतिष शास्त्र विद्या से पूर्णतया परिचित थे, अतः उन्होंने विविध नक्षत्रों, तिथियों आदि में नामकरण जैसा मुख्य संस्कार को करने का विधान किया।

स्मृतिशास्त्रीय ज्ञान आस्था एवं विश्वास की पृष्ठभूमि पर आधारित है और ज्योतिषशास्त्र एक सांख्यिकीय अध्ययन। प्रस्तुत अध्ययन सांख्यिकीय सिद्धान्तों के संदर्भ में लागू होगा अर्थात् निष्कर्ष सदैव प्रायिकता के शब्दों में दिया जायेगा। अतः अपवाद होना भी असंभव नहीं होगा। अध्ययन का अनुसरण किया जाये तो उचित समय का चयन करके अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं अर्थात् इंगित तिथि, मास, राशि, वार, नक्षत्र आदि पर केन्द्रित होकर नामकर्म संपन्न करें। ऐसे में स्मृतिशास्त्रीय नामकरण संस्कार यदि ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुरूप किया जाये तो समाज को एक सही दिशा मिल सकती है। यदि अध्ययन के प्रकाशन के उपरान्त सांख्यिकीय आँकड़ें उपलब्ध हो तो निष्कर्ष का परिमार्जन हो सकता है।

हरकेश बैरवा
व्याख्याता,
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान

मुख्य शब्द : नामकरण, संस्कार, ज्योतिष, जन्म, नक्षत्र, नामकर्म, सांख्यिकीय अध्ययन, चक्षुग्राह्य,श्रुतिसंवेद्य।

प्रस्तावना

जीव मात्र के सम्यग्ज्ञान के लिए भाषा में 'संज्ञा' शब्द की अवधारणा है। वास्तव में नामकरण व्यक्तिवाचक संज्ञा निर्धारण का ही संस्कारित स्वरूप है। नामकरण के लिए प्राचीन ऋषि– मनीषियों ने बड़ा ही वैज्ञानिक एवं सूक्ष्म चिन्तन प्रस्तुत किया, जिसकी महिमा से अगुण–अगोचर भी सगुण–साकार हो जाता है। आचार्य बृहस्पति कवित्वपूर्ण अतिशयोक्ति के साथ नामकरण की सार्थकता का उल्लेख इस प्रकार करते हैं – नाम सकल व्यवहार एवं कल्याणकारी कार्यों में भाग्योदय का हेतु और उसी से ही मनुष्य यश प्राप्त करता है, अतः नामकर्म अत्यन्त प्रशस्त है–

नामाखिलस्य व्यवहारहेतुः शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतुः।
नाम्नैव कीर्त्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नामकर्म।।[1]

नामकरण संस्कार का समय

नाम की आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखकर स्मृतिकारों ने नामकरण संस्कार को धार्मिक रूप दे दिया, क्योंकि इसके श्रवण मात्र से मनुष्य के गुणधर्मों का ज्ञान हो जाता है। इसके समय निर्धारण के विषय में अलग–अलग मत मिलते हैं। मनु एवं वसिष्ठ के मतानुसार शिशु के जन्म से दसवें या बारहवें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए– नामधेयं दशम्यां तुद्वादश्यां वाऽस्य कारयेत्।[2] लघ्वाश्वलायन, याज्ञवल्क्य आदि ने शिशु के जन्म से ग्यारहवें दिन नामकरण संस्कार संपन्नकरने को कहा है – अहन्येकादशे कुर्यान्नामकर्म विधानतः।[3] बृहस्पति के मतानुसार शिशु का नामकरण जन्म से दसवें, बारहवें, तेरहवें, सोलहवें, उन्नीसवें अथवा बत्तीसवें दिन सम्पन्न करना चाहिए।[4] मदनरत्न में इसका वर्णानुसार निर्धारण मिलता है– शिशु के जन्म से

ब्राह्मण का दसवें दिन, क्षत्रिय का सोलहवें दिन, वैश्य का बीसवें दिन तथा शूद्र का बाइसवें दिन नामकरण सम्पन्न करना चाहिए।[5] स्मृतिसंग्रह के अनुसार शिशु के जन्म से बाह्मण का ग्यारहवें दिन, क्षत्रिय का तेरहवें दिन, वैश्य का सोलहवें दिन तथा शूद्र का मासान्त में नामकर्म संस्कार करना चाहिए।[6] धर्मसिन्धु में जन्म दिन में जातकर्म के अनन्तर तत्काल ब्राह्मण का ग्यारहवें या बारहवें दिन, क्षत्रिय का तेरहवें या सोलहवें दिन, वैश्य का सोलहवें या बीसवें दिन तथा शूद्र का बाइसवें दिन या मासान्त में नामकर्म संस्कार करने का उल्लेख मिलता है।[7] शंख ने शिशु के जन्म का अशौच बीत जाने पर नामकरण संस्कार करने को कहा है – अशौचे तु व्यतिक्रान्ते नामकर्म विधीयते।[8]

ज्योतिष शास्त्र

मनु ने उक्त दिवसों में नामकर्म नहीं करने पर ज्योतिष शास्त्र में कहे शुभतिथि, उत्तममुहूर्त और गुणयुक्त नक्षत्र में नामकरण संस्कार करने को कहा है – पुण्ये तिथौ मुहूर्ते वा नक्षत्रे वा गुणान्विते।[9]

नक्षत्र विचार

मदनरत्न में वसिष्ठ का मत है कि तीनों उत्तरा, रेवती, मूल, हस्त, पुष्य, शतभिषा, श्रवण, पुनर्वसु, अनुराधा, स्वाति, मृगशिर, रोहिणी, घनिष्ठा आदि नक्षत्रों में नामकरण संस्कार सम्पन्न करना शुभदायक होता है।[10] धर्मसिन्धु के अनुसार अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र नामकरण संस्कार सम्पन्न करने में श्रेष्ठ होते हैं।[11] मुहूर्तप्रकाश में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मृगशिर, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपदा, शतभिषा, श्रवण और रेवती नक्षत्र नामकर्म सम्पन्न करने में शुभ बताये हैं। बृहस्पति ने तीनों उत्तरा, घनिष्ठा, रेवती, हस्त, मूल, पुष्य, श्रवण, स्वाति, रोहिणी आदि नक्षत्र नामकर्म सम्पन्न करने में लक्ष्मी एवं यश की वृद्धिदायक बताये हैं।[12]

तिथि विचार

धर्मसिन्धु के अनुसार चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावस्या तिथियाँ नामकरण संस्कार के लिए अशुभ फल देने वाली होती हैं। इसके अतिरिक्त तिथियाँ द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी एवं कृष्ण प्रतिपदा नामकरण संस्कार में शुभ फल देने वाली होती हैं।[13] वीरमित्रोदय में नृसिंह का मत है कि छिद्रा, पर्व, नवमीं तिथियाँ छोड़कर अन्य तिथियों में नामकर्म संस्कार सम्पन्न करना श्रेष्ठ माना जाता है। यहाँ छिद्रा से तात्पर्य है– चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी, चतुर्दशी तिथियाँ तथा पर्व से तात्पर्य–पूर्णिमा और अमावस्या हैं।[14]

वार विचार

धर्मसिन्धु के अनुसार सोम, बुध, बृहस्पति एवं शुक्रवार नामकर्म संस्कार सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ माने है– चन्द्रबुधगुरुशुक्रावासराः।[15] निर्णयसिन्धु के अनुसार जब अष्टमभाव शुद्ध हो तो बुध, गुरु एवं शुक्रवार को बालक का नामकरण संस्कार करना चाहिए।[16] मुहूर्तप्रकाश के अनुसार शुभगोचर में चन्द्रमा होने पर सोम, बुध एवं गुरुवार को नामकरण संस्कार सम्पन्न करना प्रशस्त माना है –

अन्यत्रापि शुभे योग वारे बुध शशांकयोः।
भानोर्गुरोः स्थिरलग्ने बालनामकृतिः शुभा।।

राशि विचार

निर्णयसिन्धु में स्थिर लग्न (वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ) में बालक का नामकर्म सम्पन्न करना उत्तम माना है। धर्मसिन्धु के अनुसार नामकरण संस्कार में वृष, सिंह एवं वृश्चिक लग्न श्रेष्ठ होता है।[17] ज्योतिष–विषयक ग्रन्थों के अनुसार प्राकृतिक असाधारणता अथवा धार्मिक अनौचित्य होने पर उक्त दिनों में भी संस्कार स्थगित किया जा सकता था। निर्णयसिन्धु के अनुसार अमावस्या, संक्रान्ति और भद्रा आदि में शुभ मुहूर्त होने पर भी नामकरण संस्कार सम्पन्न नहीं करना चाहिए।[18] गर्गाचार्य के मतानुसार व्यतीपात, संक्रान्ति, ग्रहण, वैधृत अथवा श्राद्ध के दिन सम्पन्न नामकर्म संस्कार अशुभ माना जाता है।[19] धर्मसिन्धु के अनुसार वैधृति, व्यतीपात, संक्रान्ति, ग्रहण, अमावस्या, भद्रा आदि में नामकरण संस्कार सम्पन्न नहीं करना चाहिए। जबकि नामकर्म संस्कार में मलमास, गुरु–शुक्रास्त, सिंहस्थगुरु, देवशयन, दक्षिणायन आदि का दोष नहीं है।[20]

चार प्रकार के नाम

आधुनिक काल के धर्मसिन्धु, वीरमित्रोदय आदि ग्रन्थों में चार प्रकार के नाम वर्णित हैं – कुलदेवतानाम, मासनाम, नक्षत्रनाम एवं व्यावहारिकनाम।[21] इस प्रकार जिस नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ हो, उस मास के देवता, कुलदेवता तथा लोक प्रचलित सम्बोधन के अनुसार चार प्रकार के नाम चलन में थे। सूत्र युग में यह पद्धति पूर्ण विकसित नहीं हो पाई थी, गृह्यसूत्र केवल नक्षत्र नाम से परिचित थे, अन्य नाम से अज्ञात थे। इस पद्धति का पूर्ण विस्तार परवर्ती स्मृतियों और ज्योतिष विषयक ग्रन्थों में हुआ। ज्योतिष जनसाधारण को नक्षत्रलोक के प्रभाव में ले आया और यह विश्वास हो गया कि प्रत्येक काल में कोई न कोई अधिष्ठाता–देवता शासन करता है।

1. नक्षत्रनाम

गृह्यसूत्रों में शिशु का जन्म जिस नक्षत्र में होता, उस नक्षत्र पर आधारित नामकर्म अथवा उस नक्षत्र के अधिष्ठाता–देवता के नाम पर नामकरण किया जाता था। शंख एवं लिखित ने विधान किया है कि पिता तथा कुलवृद्ध को शिशु का नक्षत्र से सम्बद्ध नाम रखना चाहिए।[22]

लगध के अनुसार नक्षत्रों एवं उसके देवताओं के नाम इस प्रकार हैं –

कृत्तिका–अग्नि, रोहिणी–प्रजापति, मृगशीर्ष या मृगशिरा–सोम, आर्द्रा–रुद्र, पुनर्वसु–अदिति, तिष्य या पुष्य–बृहस्पति, अश्लेषा–सर्प, मघा–पितर, पूर्वाफाल्गुनी–अर्यमा, उत्तराफाल्गुनी–भग, हस्त–सविता, चित्रा–त्वष्टा, स्वाति या निष्टया–वायु, विशाखा–इन्द्राग्नि, अनुराधा–मित्र, ज्येष्ठा–इन्द्र, मूल–निर्ऋति, पूर्वाषाढ–आप, उत्तराषाढा–विश्वेदेव, श्रवण–विष्णु, घनिष्ठा या श्रविष्ठा–वसु, शतभिषक्–वरुण, पूर्वभाद्रपदा या प्रोष्ठप्रदा–अजैकपाद, उत्तराभाद्रपदा–अहिर्बुध्न्य, रेवती–पूषा, आश्विनी या अश्वयुक्–अश्विन और भरणी–यम।[23]

यदि बालक कृत्तिका नक्षत्र में उत्पन्न होता है, तो उसका नाम कृत्तिका देवता के आधार पर आग्नेय कुमार रखा जाता और यदि बालक रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेता है तो उसका नाम रोहिणी कुमार रखा जाता था। नक्षत्र के आधार पर बालक के नामकरण का एक अन्य प्रकार

धर्मशास्त्र ग्रन्थों एवं ज्योतिष ग्रन्थों में प्रचलित रहा, जिसके कारण यह विश्वास था कि संस्कृत वर्णमाला के विभिन्न अक्षरों के विभिन्न नाम अधिष्ठाता है, जबकि अक्षर बावन (52) और नक्षत्र सत्ताइस (27) है। अतः प्रत्येक नक्षत्र के प्रभाव में एक से अधिक अक्षर है। सत्ताइस (27) नक्षत्रों में से प्रत्येक को चार पादों में विभाजित कर उन पादों के लिए एक विशिष्ट अक्षर दे दिया जाता था, यथा – जिस बालक का जन्म अश्विनी नक्षत्र में हुआ है तो वह चू, चे, चो, ला अक्षरों का अधिष्ठाता है इसलिए उसका नाम इन्हीं अक्षरों से प्रारम्भ करके चूडामणि, चेदिपति, चोलपति तथा लाटपति आदि रखा जाता था।[24]

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक नक्षत्र के अलग–अलग अक्षर अधिष्ठाता है, यथा –

चूचेचोलापदेष्वाद्ये लीलूलेलोयमस्यभे। आईऊएइमेऽग्नेर्भे ओवावीवूतथाकभे। बेबोकाकीमृगः ख्यातः कूघङच्छास्तुरौद्रभे। केकोहाही त्वदितिभे हूहेहोडा च पुष्यभे। डीडूडेडो इमे सार्पे मामीमूमे मघाभिधे। मोटाटीटू तथा भाग्ये टेटोपाप्यर्यमर्क्षके। पूषाणाठा तथा हस्ते पेपोरारीति चित्रभे। रुरेरोता तथा स्वातौ तीतूतेतो द्विदैवभे। नानीनूनेक्रमान्मैत्रे नोयायीयू इतीन्द्रभे। येयोभाभीतिमूलाख्ये भूधाफाटाजलस्यभे। भेभोजाजीतिविश्वर्क्षे
जूजेजोखाऽभिजिद्भवेत् ।खीखूखेखोश्रुतौझेयागागीगूगेचवासवे। गोसासीसू जलेशर्क्षे सेसोदादीत्यजाङ्घ्रिभे। दूथाहाला तथोपान्त्ये देदोचाचीति पौष्णभे।।[25]

पिता को पुत्र का नाम कुलदेवता और नक्षत्रयुक्त रखना चाहिए । परिशिष्ट में लिखा है कि वह नाम नक्षत्र के आद्यचरणाक्षर से युक्त होना चाहिए, जिस नक्षत्र के आदि में जो अक्षर हो वही अक्षर नाम के आदि में लगाना चाहिए। सुदर्शनभाष्य में लिखा है कि रोहिणी, रेवती, मघा, मृगशिरा, ज्येष्ठा, विशाखा आदि नक्षत्रों में जन्म लेने वाले बालक का नाम ऐसा ही रखें, जिसके आदि में वृद्धि और अन्त में ठ हो, श्रवण, भरणी, अश्विनी में विकल्प करके वृद्धि हो अन्य नक्षत्रों में 'व' आदि में ऐसे अकारहीन स्वर से परे अन्तिम स्वर ऐसा होना चाहिए जिसके परे ककार हो और वह दीर्घ न होकर विसर्गान्त हो, यथा– प्रोष्ठपद में 'प्रौष्ठपाद' अन्त्य शब्द से भरणी ली जाती है ऐसा श्रुति में कहा है। वहाँ श्रवण आदि में विकल्प से वृद्धि होती है, यथा–अपभरण और 'आपभरण' इत्यादि।[26]

बौधायन के अनुसार नक्षत्र पर आधारित नाम गुह्य रखा जाता, जो वयोवृद्धों का सत्कार करने के लिए द्वितीय नाम था तथा उपनयन के समय तक यह केवल माता–पिता को ही विदित रहता था। कुछ आचार्यों के मतानुसार गुह्यनाम जन्म के दिन रखा जाता था। आश्वलायन आचार्य अभिवादनीय नाम के विषय में लिखते हैं कि यह नामकरण के दिन निश्चित किया जाना चाहिए।[27] शौनक का भी यही विचार है – वह नाम जिसके द्वारा बालक उपनीत होने के पश्चात् वयोवृद्धों का अभिवादन करता है उसे वही नाम दिया जाता था। इस पर विचार करने के पश्चात् पिता को धीमे स्वर से शिशु के कान में कहना चाहिए, जिससे कि अन्य व्यक्ति उसे न सुन सके। उपनयन के समय माता–पिता को यह नाम स्मरण रखना होता था।[28] नक्षत्र पर आधारित नाम व्यक्ति के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। यह नाम एक विश्वास के आधार पर गुह्य रखा जाता था, ताकि इसके द्वारा शत्रु उस बालक को कोई क्षति न पहुँचा सके। गोभिल के मतानुसार यह नाम उपनयन के समय आचार्य द्वारा दिया जाना चाहिए और जन्म के समय नक्षत्र या उस नक्षत्र के देवता से सम्बन्धित होना चाहिए।

2. मासनाम

नामकरण का यह प्रकार उस मास के देवता पर आधारित होता था, जिस मास में बालक का जन्म होता। गार्ग्य का वचन है कि पिता को बालक का नाम गुरु अथवा मास के नामानुसार रखना चाहिए। यहाँ नाम रखने के दो क्रम हैं– मार्गशीर्ष मास से प्रारम्भ या चैत्र मास से प्रारम्भ। स्मृतिसंग्रह के अनुसार बारह मासों के नाम इस प्रकार हैं– कृष्णे (मार्गशिर्ष), अनन्त (पौष), अच्युत (माघ), चक्री (फाल्गुन), वैकुण्ठ (चैत्र), जनार्द्दन (वैशाख), उपेन्द्र (ज्येष्ठ), यज्ञपुरुष (आषाढ), वासुदेव (श्रावण), हरि (भाद्रपद), योगीश (अश्विन), पुण्डरीकाक्ष (कार्तिक)।[29] गर्गाचार्य के अनुसार– चैत्रादिमासनामानि वैकुण्ठोऽथ जनार्द्दनः उपेन्द्रो यज्ञपुरुषो वासुदेवो हरिस्तथा ।

योगीशः पुण्डरीकाक्षः कृष्णोऽनन्तोऽच्युतस्तथा। चक्रधारीति चैतानि क्रमादाहुर्मनीषिणः।[30]

वराहमिहिर की बृहत्संहिता में विष्णु के बारह नाम बारह महीनों से सम्बन्धित है, यथा– केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हृषीकेश, पद्मनाभ, दामोदर।[31]

3. कुलदेवतानाम

मिताक्षरा में शंख का मत है कि नाम का सम्बन्ध कुलदेवता से होना चाहिए– कुलदेवतासम्बद्धं पिता नाम कुर्यात्।[32] कुलदेवता वह देवी या देवता है जिसकी पूजा कुल या जन में अत्यन्त प्राचीनकाल से चली आ रही है। इस आधार पर शिशु का नाम रखते समय लोगों में यह विश्वास था कि शिशु कुलदेवता के संरक्षण रहेगा। अतः वे इन्द्र, सोम, वरुण, मित्र, प्रजापति आदि वैदिक अथवा कृष्ण, राम, शंकर, गणेश आदि पौराणिक देवता के नाम से सम्बंधित नामकर्म करते थे। यह नाम का तृतीय प्रकार होता था। आधुनिक काल में बहुधा लोगों के नाम देवताओं या उनके अवतारों से सम्बन्धित पाये जाते हैं – रामचन्द्र, नृसिंहदेव, शिवशंकर, पार्वती, सीता आदि।

4. व्यावहारिकनाम

व्यावहारिक के अनुसार यह चौथा नाम रखा जाता है, यथा– कवर्ग आदि वर्गों में से तीसरा, चौथा, पांचवा और हकार में से एक कोई सा अक्षर प्रारम्भिक अवयव वाला होवें, य, र, ल, व में से एक कोई सा मध्यमवर्ण से युक्त होवें, ऋ, लृ अक्षरों से रहित और अन्त में विसर्ग वाला होना चाहिए तथा पिता आदि तीन पुरुष अर्थात् पिता, पितामह, प्रपितामह में से कोई एक का वाचक होना चाहिए। शत्रुवाचक से वर्जित, तद्धित प्रत्यय से रहित और अन्त में कृदन्त प्रत्यय वाला होना चाहिए। पुरुषों का युग्म अक्षरों वाला और स्त्रियों का अयुग्म अक्षरों वाला नाम रखना उचित है, यथा – देव, हरि, कमला। उपर्युक्त दिये सब लक्षणों के अभाव में सम अक्षरों वाला नाम पुरुषों का और विषम अक्षरों वाला नाम स्त्रियों का रखना चाहिए, यथा– रुद्र, राजा आदि। इस नामकरण में स्वर और व्यंजन अक्षरों में संख्या का नियम है।[33] लघ्वाश्वलायन के कथनानुसार पुरुष का नाम सम अक्षरवाला एवं सुखदायक होना

चाहिए, यदि विषम अक्षरवाला हो तो नाम से पूर्व श्री लगाना चाहिए–

समाक्षरयुतं नाम भवेत्पुंसः सुखपदम्। विषयं यदि तत्र श्रीः समेतं च विनिर्दिशेत्।[34]

व्यावहारिक नामकरण में शुभ सूचक शब्द

नामकरण संस्कार चारों वर्णों का होता है। मनु के मतानुसार नाम समान वर्णों वाला रखना चाहिए, यथा– ब्राह्मण का नाम कल्याण सूचक, क्षत्रिय का बलसूचक, वैश्य का धनसम्पन्नता सूचक और शूद्र का नाम जुगुप्सिता सूचक रखना चाहिए।[35] उदाहरणार्थ – ब्राह्मण का नाम लक्ष्मीधर, क्षत्रिय का नाम युधिष्ठिर, वैश्य का नाम महाधन तथा शूद्र का नाम नरदास होना चाहिए। पुनश्च ब्राह्मण का नाम सुख एवं आनन्द का सूचक, क्षत्रिय का रक्षा एवं शासन का सूचक, वैश्य का पुष्टि एवं ऐश्वर्य का सूचक तथा शूद्र का नाम दास्य या आज्ञाकारिता का प्रतीक होना चाहिए।[36]

धर्मसिन्धु के अनुसार सभी वर्णों के व्यावहारिक नाम होने चाहिए, यथा– ब्राह्मण का नाम शर्मापदान्त या देवपदान्त सूचक, क्षत्रिय का नाम राजपदान्त या वर्मापदान्त सूचक, वैश्य का नाम गुप्तपदान्त या दत्तपदान्त सूचक तथा शूद्र का नाम दासपदान्त होना चाहिए।[37] शंखस्मृति के अनुसार सभी वर्णों के उपनाम इस प्रकार होने चाहिए, यथा– ब्राह्मण के नाम के अन्त मे शर्माशब्द, क्षत्रिय के नाम के अन्त में वर्माशब्द, वैश्य के नाम के अन्त में धनशब्द (गुप्तशब्द) तथा शूद्र के नाम के अन्त में दासशब्द शुभसूचक होते हैं।[38]

धर्मसिन्धु के अनुसार प्रतिष्ठा की इच्छा वाले मनुष्य का दो अक्षरों वाला नाम रखना चाहिए। ब्रह्मतेज की कामना वाले का चार अक्षरों वाला नाम रखना और नाम के अन्त में लकार एवं रेफ वर्जित होना चाहिए। आपस्तम्ब और हिरण्यकेशी सूत्र में आदि प्रातिपदिक और अन्त में धात्विक हो ऐसा नाम रखने के लिए लिखा है, यथा– 'हिरण्यदा' अथवा उपसर्ग से युक्त नाम रखना, यथा–सुश्रीः।[39] लघ्वाश्वलायन के कथन से आचार्य ही मन्त्रोच्चारपूर्वक नामकरण संस्कार को तीन बार स्वास्तिक वाचन से करें।[40]

मनु स्त्रियों के नाम के विषय में लिखते है कि स्त्रियों के नाम सुखपूर्वक उच्चारण करने योग्य, अक्रूर एवं स्पष्ट अर्थवाला, मनोहर, मंगलसूचक, अन्त में दीर्घ अक्षर वाला और आशीर्वाद से युक्त अर्थवाला होना चाहिए –

स्त्रीणां सुखोद्यमक्रूरं विस्पष्टार्थं मनोहरम्। मांगल्यं दीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधानवत्।।[41]

उपर्युक्त अभिमतों से स्पष्ट होता है कि नामकरण संस्कार के समय अक्षरों की संख्या, अक्षरध्वनि, वर्णभेद, स्त्री–पुरुष भेद का पर्याप्त ध्यान रखा जाता था, जिससे सात्विक एवं पवित्रता का भाव द्योतित होता था।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि स्मृतिकार ज्योतिष शास्त्र विद्या से पूर्णतया परिचित थे, अतः उन्होंने विविध नक्षत्र, तिथियों आदि में नामकरण जैसा मुख्य संस्कार को करने का विधान किया। स्मृतिशास्त्रीय ज्ञान आस्था एवं विश्वास की पृष्ठभूमि पर आधारित है और ज्योतिषशास्त्र एक सांख्यिकीय अध्ययन। प्रस्तुत अध्ययन सांख्यिकीय सिद्धान्तों के संदर्भ में लागू होगा अर्थात् निष्कर्ष सदैव प्रायिकता के शब्दों में दिया जायेगा। अतः अपवाद होना भी असंभव नहीं होगा।

अध्ययन का अनुसरण किया जाये तो उचित समय का चयन करके अपेक्षित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं अर्थात् इंगित तिथि, मास, राशि, वार, नक्षत्र आदि पर केन्द्रित होकर नामकर्म संपन्न करे। ऐसे में स्मृतिशास्त्रीय नामकरण संस्कार यदि ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुरूप किया जाये तो समाज को एक सही दिशा मिल सकती है। यदि अध्ययन के प्रकाशन के उपरान्त सांख्यिकीय आँकड़ें उपलब्ध हो तो निष्कर्ष का परिमार्जन हो सकता है। अतः अध्ययन की सफलता, अध्येता को उपलब्ध करवाये जा सकने वाले आँकड़ों पर आधारित होगी। अध्येता सदैव अपेक्षा करता है कि पाठकों से आँकड़ें प्राप्त हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. वीरमित्रोदय,संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 241
2. मनुस्मृति 2.30, दशमे द्वादशे वाऽह्नि नामकर्म विधीयते।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 233)
3. लघ्वाश्वलायनस्मृति 6.1, याज्ञवल्क्यस्मृति 1.12, व्यासस्मृति 1.17, बृहत्पराशरस्मृति 6.149)
4. दशाहे द्वादशाहे वा जन्मतोऽपि त्रयोदशे। षोडशैकोनविंशे वा द्वात्रिंशे वर्णतः क्रमात्।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 233)
5. द्वादशे दशमे वाऽपि जन्मतो दिवसे शुभे। षोडशे विंशतौ चैव द्वाविंशे वर्णतः क्रमात्।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 233)
6. एकादशेऽह्नि विप्राणां क्षत्रियाणां त्रयोदशे। वैश्यानां षोडशे कार्यं मासान्ते शूद्रजन्मनः।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 234)
7. तत्र जन्मदिनेजातकर्मानन्तरं तत्कालःकश्चित् एकादशाहेद्वादशाहेवाविप्रस्यनामकर्मक्षत्रियाणांत्रयोदशेषोडशेवा दिनेवैश्यानांषोडशेविंशतितमे वादिनेद्वाविंशेमासान्ते वा शूद्राणाम्। (धर्मसिन्धु,तृ.परि.पृ.279, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली–2009, टीकाकार–राजवैद्य रविदत्त शास्त्री)
8. शंखस्मृति 2.2
9. मनुस्मृति 2.30
10. मदनरत्ने वसिष्ठः उत्तरारेवतीहस्तमूलपुष्याः सवारुणाः। श्रवणादितिमैत्रं च स्वातीमृगशिरस्तथा। प्राजापत्यं घनिष्ठाच प्रशस्तानामकर्मणि। (निर्णयसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 428, चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी–2009, अनुवादक– श्री व्रजरत्न भट्टाचार्य)
11. अश्विनीत्र्युत्तरारोहिणीमृगपुनर्वसुपुष्यहस्तस्वात्यनुराधाश्रवणघनिष्ठाशततारकारेवत्योनक्षत्राणि।(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 279)
12. त्र्यत्तरासु घनिष्ठायां रेवतीहस्तयोरपि। मूलवारुणपुष्येषु श्रवणादित्ययोरपि। मैत्रवाजिभयोः स्वातिरोहिण्यैन्दवभेषु च। कुर्यान्नामक्रियां विद्वानायुः श्रीकीर्त्तिवृद्धये।
13. (वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 235–36 चतुर्थीषष्ठ्यष्टमीनवमीद्वादशीचतुर्दशीपंचदशीरहितास्तिथयः प्रशस्ताः।(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 279)
14. छिद्राख्यां पर्व नवमीं हित्वा शेषाः शुभावहाः। चतुर्थीषष्ठ्यष्टमीद्वादशी चतुर्दश्यः छिद्राः। एताश्च पंचदशीं नवमीं च सप्त तिथिर्विहाय शेषास्तिथयो नामकर्मणि विहिताः।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 235)
15. धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 279
16. शुद्धेष्टमेभार्गवज्ञाचार्यामृतपादभागादिवसेनामानिकुर्याच्छिशोः।(निर्णयसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 427)
17. वृषभसिंहवृश्चिकलग्नानिप्रशस्तानि।(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 279)

18. अमासंक्रान्तिविष्ट्यादौप्राप्तकालेपिनाचरेत्।(निर्णयसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 427)
19. व्यतीपाते च संक्रान्तौ ग्रहणे वैधृतावपि। श्राद्ध विना शुभं नैव प्राप्तकालेऽपि मानवः। (वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 234)
20. वैधृतिव्यतीपात संक्रान्तिग्रहणादिनामावास्याभद्रा सुप्राप्तकालेऽपिनामकर्मादि शुभकर्मनकार्यम्। अत्र मलमास गुरुशुक्रास्तादि दोषो नास्ति।
(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 279)
21. तानिनामानि चतुर्विधानि देवतानाम मासनाम नाक्षत्रनाम व्यावहारिकनामेति।(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 280) तच्च नाम चतुर्विधम्। कुलदेवतासंबद्धं माससंबद्धं नक्षत्रसंबद्धं व्यावहारिकं चेति।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 237)
22. नक्षत्राभिसम्बद्धं पिता वा कुर्यादन्यो वा कुलवृद्ध इति।(वीरमित्रोदय ,संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 237)
23. अग्निः प्रजापतिः सोमो रुद्रोऽदितिर्बृहस्पतिः। सर्पाश्च पितरश्चैव भगश्चैवार्यमाऽपिच। सविता त्वष्टाऽथवायुश्चेन्द्राग्नी मित्र एव च। इन्द्रो निर्ऋतिरापो विश्वे देवास्तथैव च। विष्णुर्वसवो वरुणो अजैकपात्तथैव च। अहिर्बुध्न्यस्तथा पूषा अश्विनौ यम एव च। नक्षत्रदेवता एता एता वै यज्ञकर्मणि। यजमानस्य शास्त्रज्ञैर्नाम नक्षत्रजं स्मृतम्।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 239)
24. आद्ये अश्विनीनक्षत्रेपदेषु चतुर्ष्वपि चरणेषु ततश्चतत्तदक्षरादीनिचूडामणिचेदिपतिचोलपतिलाटपतिरित्याद ीत्युन्नेयानि।(वही, पृष्ठ 240)
25. वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 239–40
26. कुलदेवतानक्षत्रसंबद्धं पिता नाम कुर्यादिति मदनरत्ने शंखोक्तेः। तच्चनक्षत्रपादाक्षराद्याक्षरं कुर्यादेत्युक्तं परिशिष्टे। तदक्षरादिकं नाम
यस्मिन् धिष्ण्येयदक्षरमिति। सुदर्शनभाष्ये तु रोरेममृज्येविषु वृद्धिरादौठांत्ये च वांतेश्रवशाश्वयुक्षु। शेषेषुनाम्वोंःकमरःस्वरोंत्यः स्वाप्यारदीर्घः
सविसर्ग इष्टः। इत्युक्तंठांत्येति प्रोष्ठपदेत्यत्रादौठात्परेच वृद्धिः प्रौष्ठपाद इति अन्त्यमपभरणी शब्दः श्रुतावुक्तः। तत्र श्रवणादौचवादिवृद्धिः। अपभरण आपभरण इत्यादि। (निर्णयसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 428)
27. नक्षत्रनामधेयेनद्वितीयंनामधेयंगुह्यम्। अभिवादनीयंचसमीक्षेत तन्मातापितरौविद्यातामोपनयनादिति।(वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 238)
28. येन नाम्नोपनीतोऽसौ करिष्यत्यभिवादनम्। तच्चास्मिन्नेव समये कर्त्ताऽसौ नामकर्मणः। अभिवादननामेदमस्येत्यालोच्य चेतसा। उपांशु
निर्दिशेच्चैतन्नजानीयुर्यथा परे। तच्च नामौपनयनं स्मरेतां पितरौ शिशोः।(वीरमित्रोदय,.संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 238)
29. तत्रैव गार्ग्यःमासनामगुरोर्नामदद्याद्बालस्यवैपिता। कृ ष्णोऽनन्तोऽच्युतश्चक्रीवैकुण्ठोऽथजनार्दनः।
उपेन्द्रोयज्ञपुरुषोवासुदेवः तथाहरिः। योगीशः
पुण्डरीकाक्षो मासनामान्यनुक्रमात्। अत्र मार्गशीर्षादिश्चैत्रादिर्वाक्रम इति। (निर्णयसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 428)
30. वीरमित्रोदय, संस्कारप्रकाश, पृष्ठ 237
31. डॉ. काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग–एक, पृष्ठ 200
32. याज्ञवन्क्यस्मृति 1.12 पर उद्धृत मिताक्षराटीका
33. व्यावहारिकं नामचतुर्थं तच्चकवर्गादिषु तृतीय चतुर्थ पंचम वर्ण हकारान्यतमवर्णाद्यावयवकं यरलवान्यतममध्यवर्णयुतं ऋलृवर्णरहितं
विसर्गान्तं पित्रादिपुरुषत्रयान्यतमवाचकं शत्रुवाचकभिन्नं तद्धितप्रत्ययरहितं कृत्प्रत्ययान्तं युग्माक्षरं पुंसां अयुग्माक्षरं स्त्रीणां कार्यं यथा देव
इति हरिरिति उक्त सर्वलक्षणाभावे समाक्षरंपुसां अयुग्माक्षरं स्त्रीणामित्येक लक्षण युतमेव यथा रुद्र इति राजेत्यादि अक्षरमत्रस्वरः
व्यंजनेषुनसंख्यानियमः। (धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 280)
34. लघ्वाश्वलायनस्मृति 6.4
35. मांगल्यं ब्राह्मणस्य स्यत्क्षत्रियस्य बलान्वितम्। वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्।। शर्मवद्ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो
36. रक्षासमन्वितम्। वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुताम्।।(मनुस्मृति 2.31– 32)
37. तच्च व्यावहारिकं नाम शर्मपदान्तं देवपदान्तं वा ब्राह्मणस्यवर्मेतिराजेति वा पदयुक्तं क्षत्रियस्य गुप्तदत्तान्यतरान्तं वैश्यस्य दासान्तं
शूद्रस्यकार्यम्।(धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 280)
38. शर्मान्तं ब्राह्मणस्योक्तं वर्मान्तं क्षत्रियस्य तु। धनान्तं चैव वैश्यस्य दासान्तं वान्त्यजन्मनः।(शंखस्मृति 2.4)
39. अत्र विशेषःद्वयक्षरं प्रतिष्ठाकामश्चतुरक्षरं ब्रह्मवर्चसकामः अन्त्यलकाररेफं वर्जयेदिति। आपस्तम्बहिरण्यकणेशिसूत्रे तु प्रातिपदिकादिधात्वन्तं यथा हिरण्यदा इति उपसर्गयुतं वा सुश्रीरित्यादीतिविशेष उक्तः। (धर्मसिन्धु, तृतीय परिच्छेद, पृष्ठ 280)
40. आचार्येणात्र मन्त्रोऽयं नामानि तु उदाहृतः। त्रिस्त्रिः स्यात्पतिनामैवं ततः स्वस्तीति निर्दिशेत्। (लघ्वाश्वलायनस्मृति 6.5–6)
41. मनुस्मृति 2.33